भूमिका

समाज सक्रिय रूप से मुख्य जानकारी के अनुवाद को लिखित ढांचे में आगे बढ़ा रहा है। हालांकि इस वर्तमान समय में हमारे पास ऐसे साधन नहीं हैं जिनसे हम अंग्रेज़ी के अलावा अन्य भाषाओं में प्रश्नों के उत्तर दे सकें। हालांकि यदि आप अंग्रेज़ी बोलते हैं और आपकी अनुवाद, या पृष्ठों की व्यवस्था संबंधी कोई टिप्पणियाँ हों, तो कृप्या हमें अपनी टिप्पधियों के साथ इस ईमेल पते पर सम्पर्क करें : translations@encephalitis.info

एनसेफेलाइटिस – संक्षिप्त तथ्य

एनसेफेलाइटिस असल में क्या है ?
एनसेफेलाइटिस का सीधा सा मतलब है मस्तिष्क में सूजन और यह आमतौर पर जीवाणु (वायरल) संक्रमण के कारण बहुत ही कम मामलों में होता है। एनसेफेलाइटिस मस्तिष्क ज्वर यानी मेनेंजाइटिस से भिन्न होता है, क्योंकि मेनेंजाइटिस मस्तिष्क को ढकने वाली परतों की सूजन से होता है, यद्यपि यह भी जीवाणु या सूक्ष्माणु के संक्रमण से ही होता है।

एनसेफेलाइटिस कितने प्रकार का होता है ?

मुख्य रूप से इसके दो प्रकार हैं :
तीक्ष्ण जीवाणु एनसेफेलाइटिस– जिसमें जीवाणु सीधे मस्तिष्क पर हमला करता है।

संक्रमण– पश्चात् एनसेफेलाइटिस (जिसे एक्यूट डिसेमिनेटिड एनसेफेलोमाइलाइटिस या एडीईएम कहते हैं) इसमें मस्तिष्क के बाहर का संक्रमण शरीर की रोग–प्रतिरोधी प्रणाली को तेज करके मस्तिष्क पर हमला करता है।

एनसेफेलाइटिस किसे हो सकता है ?
किसी को भी हो सकता है। हालांकि आंकड़ों के अनुसार सबसे ज्यादा जोखिम जन्म से 7 साल, 16 से 25 साल और फिर 55 साल से ज्यादा आयु वर्ग में होता है। ब्रिटेन और आयरलैंड में प्रतिवर्ष एक लाख में से औसतन चार लोग इसकी चपेट में आते हैं।

एनसेफेलाइटिस किन कारणों से होता है।

इसे फैलाने वाले जीवाणु अक्सर सामान्य जीवाणु होते हैं, इनमें खसरा, छोटी माता, इंफ्लूएंजा, पेट के कीड़ों और हर्पीज सिम्पलक्स के जीवाणु शामिल रहते हैं। अधिकांश मामलों में सही वायरस की पहचान नहीं हो पाती है।

इसके प्रमुख लक्षण क्या हैं ?

एनसेफेलाइटिस की शुरूआत अक्सर फ्लू जैसे बुखार या सिरदर्द से होती है। इस रोग की गंभीरता दर्शाने वाले लक्षण बाद में प्रकट होते हैं, जिनमें खासतौर पर होश का स्तर गड़बडाता रहता है। इनमें रोगी को मतिभ्रम, उनींदापन, दौरे पड़ना, या फिर बेहोशी में चले जाना शामिल है। अन्य लक्षणों में तेज रोशनी बर्दाश्त न कर पाना, बोल न पाना, या हाथ पैरों की हरकत पर नियंत्रण न रहना। गर्दन अकड़ जाना तथा विचित्र व्यवहार आदि आते हैं जो इस बात पर निर्भर करते हैं कि मस्तिष्क के कौन से हिस्से पर वायरस का हमला हुआ है।

एनसेफेलाइटिस की पहचान कैसे की जाती है ?

एनसेफेलाइटिस की पहचान वहीं की जाती है, जहाँ सूजन का पक्का पता चल जाये। संभावित लक्षणों की रेंज और उनके बढ़ने की दर, में व्यापक अन्तर रहता है और यह केवल एनसेफेलाइटिस के ही लक्षण नहीं होते, इसलिए पहचान या निदान करने में मुश्किल आ सकती है।

अन्य संभावनाओं को कैसे छोड़ा जाए ?

मेरूदंड में छेद करके जीवाणु मेनेंजाइटिस की संभावना की पुष्टि न होने पर हर्पीज जीवाणु का पता लगाने की कोशिश की जाती है। मस्तिष्क का सीटी या एम आर आई स्कैन, करके मस्तिष्क में फोड़े, नसों के उलझने से गाँठ बन जाने और लकवे की संभावना तलाशी जाती है तथा यह भी पता चलता है कि सूजन कितनी है, खून की जाँच से मेटाबोलिक एनसेफेलोपेथिज की संभावना की जांच की जाती है।

एनसेफेलाइटिस का उपचार कैसे किया जाता है ?

एकिक्लोविर से तुरन्त उपचार महत्वपूर्ण है। एकिक्लोविर एक एंटीवायरल एजेंट है, जो हर्पीज वायरस की रोकथाम में बहुत प्रभावी रहता है। हालांकि हर बार पता नहीं चला पाता है लेकिन हर्पीज वायरस अपने देश में एनसेफेलाइटिस के ज्ञात कारणों में सबसे आम है। मस्तिष्क को संक्रमित करने वाले किसी अन्य वायरस का फिलहाल कोई खास निर्धारित उपचार नहीं है। अन्य उपचारों में दौरे रोकने की दवा और नींद लाने के लिए सेडेटिव्स दिये जाते हैं, ताकि रोगी की उत्तेजना कम हो। वेंटीलेशन (कृत्रिम श्वास प्रणाली) पर रोगी को रखना भी गंभीर मामलों में जरूरी होता है, ताकि मस्तिष्क की सूजन कम की जा सके। बैक्टीरियल संक्रमण के उपचार के लिए एंटीबायोटिक्स दिये जा सकते हैं।

क्या रोगी ठीक हो जाते हैं ?

वायरल संक्रमण और सूजन के कारण पड़ने वाले अत्यधिक दबाव के कारण स्नायुसेल क्षतिग्रस्त हो जाते हैं या नष्ट भी हो सकते हैं, इसे एक्वायरड ब्रेन इंजरी– एबीआई कहते हैं। इसलिए एनसेफेलाइटिस के कारण मस्तिष्क के कार्यों में कुछ कमी आने की आशंका बनी रहती है। लेकिन कुछ मामलों में यह प्रकोप बहुत कम रहता है, जिससे सोचने की गति में कुछ कमी आना जैसे मामूली असर होकर रह जाते हैं लेकिन कुछ अन्य मामलों में यह प्रक्रोप बहुत तेज होता है, जिससे ज्यादा नुकसान पहुंचता है।

रोगी की हालत में सुधार की गति धीमी रहती है और उसमें लम्बा समय लगता है। जिसके लिए उसे सक्रिय रखने तथा विश्राम देने की प्रक्रिया जारी रखी जाती है। न्यूरोसाइकोलोजिस्ट (मस्तिष्क मनोवैज्ञानिक) की भी राय ली जाती है, ताकि यह पता चल जाये कि मस्तिष्क के कौन कौन से कार्यों पर असर पड़ा है और उन्हें किस तरह ज्यादा से ज्यादा फिर बहाल किया जा सकता है।

बाद में क्या प्रभाव हो सकते हैं ?

एनसेफेलाइटिस का किसी व्यक्ति पर लम्बे दौर में कैसे और कितना प्रभाव पड़ेगा, यह बात हर मामले में अलग–अलग अनुपात में होती है। थकान, बार–बार सिरदर्द, याददाश्त में परेशानी, किसी चीज में ध्यान न लगाना और संतुलन न रहना, अक्सर हो जाते हैं, और साथ ही बार बार गुस्सा आना, मूड अचानक खराब हो जाना, आक्रमक रूख बन जाना, आदि लक्षण भी पाये जाते हैं। एनसेफेलाइटिस के ठीक हो जाने के कुछ हफ्तों या महीनों बाद मिर्गी, के दौरे भी शुरू हो सकते हैं। शारीरिक लक्षणों में शरीर की तरफ कमजोरी महसूस होना, चेतना की कमी और शरीर पर नियंत्रण न रह पाने की शिकायतें पैदा हो सकती हैं। बोल न पाने या सही न बोल पाने की शिकायत भी आमतौर पर हो जाती है। सोचने और प्रतिक्रिया व्यक्त करने की गति धीमी पड़ जाती है।

मृत्यु

अन्य संक्रामक रोगों के मुकाबले एनसेफेलाइटिस रोगियों की मृत्यु दर कहीं ज्यादा होती है। यह रोग तुरन्त घातक बन जाता है जिससे समूचा परिवार सकते में रह जाता है। यह समझना कठिन है कि आज के आधुनिक युग में किसी वायरस का इतना घातक प्रभाव कैसे हो सकता है।